शान्तिवन उड़ती कला का एयरपोर्ट

आज बापदादा के पास पहुंचते ही बापदादा बहुत रमणीक रूप से मुस्करा रहे थे और बहुत मीठी दृष्टि से समीप बुला रहे थे। बाबा के मुस्कान से ऐसे लग रहा था जैसे पहले से ही कोई बात को जानते हुए मुस्करा रहे हों। मैं भी मुस्कराती रही। कुछ समय के बाद बाबा बोले – बच्ची, तुम्हारी दादी को विशाल शान्तिवन देख बहुत नये-नये संकल्प चलते हैं ना! बच्ची को कहना कि बहुरूपी बाप ने बनवाया है तो बहुत अच्छे-अच्छे बहु कार्य में लगना ही है।

6⃣3⃣9⃣ ये शान्तिवन ब्राह्मणों के उड़ती कला का एयरपोर्ट बनेगा।

6⃣3⃣9⃣ ब्राह्मणों के आपसी मिलन, रूहरिहान, रिफ्रेश होने का रूहानी मौज मनाने का रमणीक विहार बनेगा।

6⃣3⃣9⃣ ये शान्तिवन ब्राह्मणों को नम्बरवन में ले जाने का तपस्या स्थान बनेगा।

6⃣3⃣9⃣ ये शान्तिवन सम्बन्धियों और सहयोगियों को स्नेह में समीप लायेगा।

6⃣3⃣9⃣ ब्राह्मणों के श्रेष्ठ साधना अर्थात् एकान्तवास का साधन बनेगा।

6⃣3⃣9⃣ भिन्न-भिन्न वर्गो के बड़े-बड़े सेमीनार्स, स्नेह मिलन द्वारा एक धक से अनेक आत्माओं को सन्देश मिलेगा।

6⃣3⃣9⃣ आबूरोड के लिए दर्शनीय स्थान बनेगा। जैसे ओम् शान्ति भवन टूरिस्ट स्थान बना है, ऐसे ये भी बनेगा।

6/39 आईवेल के समय एशलम बनेगा।

उसके बाद बाबा बोले – बच्ची (दादी जी) को बहुत-बहुत मुबारक देना कि समय पर सबको उमंग-उत्साह में लाते शान्तिवन तैयार कराया। बापदादा बच्ची को सदा अमृतवेले से पहले मिलन मनाते, प्रेरणा देते रिफ्रेश करते रहते हैं और दृष्टि से मीठी-मीठी एकस्ट्रा शक्ति का वरदान भी देते हैं। साथ में सर्व साथी जो निमित्त हैं उन्हों को भी बाबा विशेष स्नेह की दुआयें देते रहते हैं। अच्छा – ओमशान्ति।